8

हिंदी रत्न

उत्तर–पुस्तिका

BLUE SKY
BOOKS INTERNATIONAL
2647, Roshan Pura, Nai Sarak,Delhi-110006
Phone : 98994 23454, 98995 63454
E-mail : blueskybooks@gmail.com

हिंदी रत्न-8

1 वह देश कौन-सा है?

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. भारत संसार में सबसे पहले सभ्य था।
2. समुद्र भारत के चरण निरंतर धो रहा है।
3. भारत में अनंत धन भरा है।
4. कवि ने संसार का शिरोमणि भारत को कहा है।
5. हमारा देश प्रकृति की गोद में बसा हुआ है।

लिखित अभिव्यक्ति

1. कवि के अनुसार जगदीश का दुलारा भारत है।
2. भारत दिन-रात हँस रहा है।
3. हरियालियाँ भारत में लहकती हैं।
4. कवि ने भारत को आनंदमय कहा है।
5. हमारे देश के अंग-अंग में रसीले फल, कंदमूल और अनाज सजे हुए हैं।

ख. 1. की गोद में 2. स्वर्ग-सा 3. हिमालय को
4. अनंत धन से 5. ज्ञान दिया

ग. 1. इन पंक्तियों द्वारा कवि यह पूछ रहा है, कि वह सुंदर तरीके से सींचा हुआ देश कौन-सा है, जहाँ नदियों में अमृत की धारा बह रही है।

2. इन पंक्तियों द्वारा कवि यह पूछ रहा है, कि वह देश कौन-सा है, जो पूरे विश्व में सबसे सभ्य तथा महान बना हुआ है। वह देश कौन-सा है, जो पूरे संसार का दुलारा है।

भाषा ज्ञान

क. 1. फल-कंद-नाज 2. मैदान-गिरि-वनों

ख.
जातिवाचक संज्ञा - देश, नदियाँ, फल
व्यक्तिवाचक संज्ञा - भारत, हिमालय, प्रकृति
भाववाचक संज्ञा - मनमोहनी, सलोना, यशस्वी

ग. 1. स्वदेश - परदेश 2. सुगंध - दुर्गंध
3. अनंत - अंत 4. प्रथम - अंतिम
5. सभ्य - असभ्य 6. उचित - अनुचित
7. सौभाग्य - दुर्भाग्य 8. सुख - दुःख

घ. 1. पैर - पग चरण 2. हिमालय - हिमगिरि पर्वतराज
3. सागर - रत्नेश समुद्र 4. अमृत - सुधा अमिय
5. धरती - पृथ्वी धरा

ङ. 1. मिट्टी – भारतवर्ष की मिट्टी बहुत पवित्र है।
2. पृथ्वी – पूरे पृथ्वी पर प्रदूषण के दुष्प्रभाव देखे जा सकते हैं।
3. चरण – हमें बड़ों के चरण छूकर आशीर्वाद लेना चाहिए।
4. स्वदेश – स्वदेश सभी को प्यारा होता है।
5. सुगंध – एक फूल की सुगंध सभी को मोह लेती है।

रचनात्मक ज्ञान

क. कन्याकुमारी।

ख. भारत का प्राकृतिक सौंदर्य अनुपम और विविध है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और गुजरात से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक भारत में प्राकृतिक सौंदर्य के अद्‌भुत दर्शन होते हैं। हर प्रदेश अपने अंदर सुंदर प्राकृतिक सौंदर्य को संजोए हुए है। शिमला, मनाली, नैनीताल, कश्मीर, दार्जिलिंग, गोवा आदि प्राकृतिक स्थल न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में अपने सौंदर्य के लिए प्रसिद्‌ध हैं। लाखों विदेशी पर्यटक हर साल भारत के प्राकृतिक स्थलों का लुत्फ़ उठाने आते हैं। गंगा, यमुना, नर्मदा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, गोदावरी आदि बड़ी-बड़ी नदियाँ प्राकृतिक सौंदर्य को बढ़ाने का काम करती हैं। यहाँ प्राकृतिक विविधता के मनोहारी दर्शन होते हैं। जहाँ एक ओर रेगिस्तान है, तो दूसरी ओर बर्फ़ के पर्वत हैं। समुद्री तट के साथ-साथ हरे भरे मैदानी प्रदेश भी हैं। झरने, जंगल, पर्वत, रेगिस्तान, बर्फ़ीले प्रदेश आदि सभी प्रकार के प्राकृतिक स्थल भारत में मौजूद हैं। प्राकृतिक सौंदर्य के अद्‌भुत नज़ारे भारत में देखने को मिलते हैं। केरल, उत्तरपूर्व, छत्तीसगढ़ आदि की हरियाली, प्राकृतिक सौंदर्य का एक मनमोहक उदाहरण है। सभी प्रकार से भारत का प्राकृतिक सौंदर्य अलौकिक, अद्‌भुत और मन को आनंदित करने वाला है। हम भारतवासियों को प्रकृति के इस उपहार को सहेज कर रखना चाहिए।

ग. स्वयं करें।

घ. सिर सजाने वाले ताज को मुकुट कहते हैं।
हिमालय भारत का मुकुट है। हिमालय हमारी अनमोल प्राकृतिक संपत्ति है। उसका हमारे जीवन पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव है। हिमालय भारत की जलवायु को प्रभावित करता है जिसके कारण हमारे देश में मानसून की वर्षा होती है। हिमालय हमारी पड़ोसी देशों के आक्रमणों से रक्षा करता है। भारत की मुख्य नदियाँ हिमालय से ही उत्पन्न होती हैं। हिमालय का वन प्रदेश हमारे लिए बहुत उपयोगी है। इस प्रकार हिमालय भारत के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, यदि हिमालय न होता तो हम इन सब सुविधाओं से वंचित रह जाते।

ङ. हिमालय, समुद्र, हरियाली, फल-कंद-नाज आदि।

पंच परमेश्वर

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. जुम्मन ने अलगू चौधरी के पक्ष में फ़ैसला सुनाया।

2. एक-दूसरे के विचार मिलना ही मित्रता का मूलमंत्र है।
3. खाला ने अलगू चौधरी को सरपंच नियुक्त किया।
4. पंचायत का काम सही फ़ैसला सुनाना है।
5. समझू साहू एक व्यापारी था।

लिखित अभिव्यक्ति

1. रजिस्ट्री-मोहर ने खालाजान की ख़ातिरदारियों पर भी मुहर लगा दी। जुम्मन की पत्नी करीमन रोटियों के साथ कड़वी बातों के कुछ तेज़, तीखे़ सालन भी देने लगी। जुम्मन शेख़ भी निष्ठुर हो गए। अब बेचारी खालाजान को प्राय: नित्य ही ऐसी बातें सुननी पड़ती थीं।
2. जुम्मन को पंचायत में अपनी जीत पर विश्वास था, क्योंकि पंचों में उसका मित्र अलगू चौधरी भी था और वह सोचता था, कि अलगू जुम्मन की तरफ़ से ही फ़ैसला सुनाएगा।
3. अलगू चौधरी ने अपना फ़ैसला खालाजान के पक्ष में सुनाया।
4. अलगू चौधरी और जुम्मन की मित्रता में दरार का मुख्य कारण अलगू चौधरी का फ़ैसला खालाजान के पक्ष में करना था।
5. जब अलगू चौधरी के पक्ष में जुम्मन ने अपना फ़ैसला सुनाया और उसे अपनी गलती का भी एहसास हो गया, तब दोनों की मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर से हरी हो गई।

ख. 1. रुतबा 2. खाला 3. पेड़ के नीचे
4. जुम्मन 5. पंच में

ग. 1. ईमान 2. भाई 3. बहली
4. कहकहा 5. जुम्मन

भाषा ज्ञान

क. 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

ख.
1. खाला – मौसी
2. ख़िदमत – सेवा
3. मिल्कियत – जायदाद
4. फर्ज़ – कर्त्तव्य
5. अल्लाह – प्रभु
6. तकलीफ़ – परेशानी
7. ईमान – नीयत
8. ज़िक्र – चर्चा
9. कसर – कमी
10. अख़्तियार – नियंत्रण

ग. स्वयं करें।

घ.

1.	मित्रता ✓	अटल	जन्म
2.	चिलम	शिक्षा	संबंधियों ✓
3.	स्थानीय ✓	खाला	निर्वाह
4.	हिरन	नम्रता ✓	दूभर
5.	अन्याय ✓	सचेत	हड्डियाँ

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।

ख. स्वयं करें।

3 सफ़र के साथी

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. स्वीडन की यात्रा विदेशी सर्दियों में नहीं करते हैं।
2. लेखक ने स्वीडन की यात्रा सर्दियों में की।
3. स्वीडन में लोग लकड़ी के घरों में रहते हैं।
4. स्वीडन के यात्री स्लेज गाड़ियों से चलते हैं।
5. लेखक को घोड़ा नहीं मिला, क्योंकि दो व्यापारी वहाँ मौजूद दोनों घोड़े किराए पर ले गए थे।
6. लार्स लाल गालों और नीली आँखों वाला स्वस्थ किशोर था। उसके केश सुनहरे थे।

लिखित अभिव्यक्ति

1. स्लेज लकड़ी की गाड़ियाँ होती हैं, जिसे घोड़ों के द्वारा चलाया जाता है।
2. स्वीडन के लोग लकड़ी के घरों में रहते हैं।
3. स्वीडन में परिवहन का साधन घोड़े और स्लेज है।
4. लेखक और मार्स ने रात्रि स्लेज में बिताई।
5. लार्स दाएँ-बाएँ देख रहा था, कि उनकी बाईं तरफ़ पहाड़ियों की श्रृंखला थी। अब उस तरफ़ से हवा के लिए कोई रुकावट नहीं थी। इसलिए उड़ती बर्फ़ के ढेर बहुत जल्दी इकट्ठे हो जाते हैं। उनके बीच से निकलना एक समस्या है। ऐसे में वहाँ रहने वाले किसान बाहर आकर बर्फ़ के ढेरों को हटाने का काम करते हैं।
6. लार्स ने घासफूस को स्लेज की तली में अच्छी तरह बिछा दिया। फिर उस पर रेंडियर की खालें बिछा दीं और उन्हें स्लेज के सब तरफ़ अच्छी तरह लपेट दिया।
7. स्वीडन में बर्फ़ को हटा कर रास्ता बनाया जाता है। वहाँ के किसान आकर बर्फ़ के ढेरों को हटाने का काम करते हैं। इसमें वे अपने घोड़ों और बैलों की मदद लेते हैं।
8. लेखक वापसी में लार्स को अपने साथ ले जाना चाहता था, क्योंकि वे दोनों गहरे दोस्त बन चुके थे।

ख. 1. स्टॉकहोम 2. लैपलैंड 3. घास-फूस 4. स्वयं करें

ग. 1. हिम 2. क्षेत्र, लकड़ी 3. घोड़ों
4. तापमान 6. लार्स 7. रात

भाषा ज्ञान

क. 1. ✓ 3. ✓ 5. ✓ 7. ✓

ख.

1.	ठंड	–	सर्दी	2.	विदेशी	–	परदेशी
3.	हिम	–	बर्फ़	4.	हिम्मत	–	साहस
5.	लकड़ी	–	काठ	6.	घर	–	गृह
7.	आदमी	–	मनुष्य	8.	हवा	–	वायु
9.	घोड़ा	–	अश्व	10.	अँधेरा	–	अंधकार

11. आँखों – नेत्रों
12. माँ – माता
13. रास्ता – पथ
14. मित्र – दोस्त

ग. 1. मैंने भयंकर सर्दी में यात्रा शुरू नहीं की।
मैंने कब यात्रा शुरु की?
2. घोड़े के साथ कोई नहीं रहता है।
घोड़े के साथ कौन रहता है?
3. मैंने घोड़ों के साथ यात्रा शुरू नहीं की।
मैंने किसके साथ यात्रा शुरु की?
4. उसका पिता नील मीटरसन अगले घोड़ा केंद्र पर मौजूद नहीं था।
उसका पिता नील मीटरसन कहाँ मौजूद था?
5. मेरा मन आशंकित नहीं था।
मेरा मन आशंकित क्यों था?
6. रास्ता ऊबड़-खाबड़ नहीं था।
रास्ता कैसा था?

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।
ख. स्वयं करें।
ग. स्वयं करें।
घ. स्वयं करें।
ङ. स्वयं करें।

4 जीवन का झरना

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. कवि ने जीवन को झरना कहा है।
2. झरना मस्ती में आगे बढ़ता जाता है।
3. जिस दिन जीवन रूपी झरने की गति रुक जाएगी, उस दिन मनुष्य मर जाएगा।
4. झरना मुड़कर पीछे देखने को मना करता है।
5. झरना झरकर कहता है कि मरना है, परंतु रुकना नहीं।

लिखित अभिव्यक्ति

1. झरने रूपी जीवन का पानी मस्ती है।
2. झरने और जीवन में सिर्फ़ एक धुन चलते रहने की है।
3. लहरों के उठने और गिरने से किनारे पर नाविक पछताता है।
4. यौवन कहता है कि तुम आगे बढ़ते चलो, यह मत सोचो कि क्या होगा।
5. जीवन सदैव चलता रहता है।

ख. 1. दोनों किनारे 2. यौवन 3. झरना
4. यौवन 5. मर जाना

ग. 1. इन पंक्तियों द्वारा कवि यह कहना चाहता है, कि झरना पहाड़ के ऊपर से गिरता हुआ धरती पर आ गिरा। यह किसी को पता नहीं था, कि वह किस घाटी से बहकर आया था।
2. इन पंक्तियों द्वारा कवि कहना चाहता है, कि जीवन का काम केवल चलते रहना है। जिस दिन जीवन रूपी झरना रुक जाएगा, उस दिन मनुष्य मर जाएगा।

भाषा ज्ञान

क.	1.	अंतर	–	फ़र्क	भिन्नता	2.	अंचल	–	क्षेत्र प्रांत
	3.	गति	–	गाँठ	समूह	4.	जग	–	संसार जगत
	5.	घड़ी	–	काल	वक्त	6.	धुन	–	मौज दशा

ख.	1.	जीवन	–	मृत्यु	2.	समतल	–	ढालू
	3.	नीचे	–	ऊपर	4.	अचल	–	विचल
	5.	दुर्दिन	–	सुर्दिन	6.	पीछे	–	आगे
ग.	1.	घड़ी	–	घड़ियाँ	2.	घाटी	–	घाटियाँ
	3.	तीरों	–	तीर	4.	झरना	–	झरने
	5.	राह	–	राहें	6.	पेड़ों	–	पेड़

घ. 1. जीवन – जीवन एक झरने के समान है।
2. राह – हमें राह पर चलते रहना चाहिए।
3. बाधा – हमें जीवन की किसी भी बाधा से घबराना नहीं चाहिए।
4. युवक – युवक को हमेशा प्रयत्न करते रहना चाहिए।
5. घड़ियाँ – कठिन घड़ियों के समय हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

ङ. 1. मृत्यु 2. मार्ग 3. घाटियाँ 4. युवती 5. घड़ी

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।
ख. स्वयं करें।
ग. स्वयं करें।

5 बूढ़ी काकी

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. बूढ़ी काकी के पति बहुत पहले गुज़र चुके थे। उसके बेटे भी जवान होते-होते मर गए। अब बूढ़ी काकी का उनके भतीजे के अलावा कोई नहीं था। इसलिए वह अपने भतीजे के पास रहती थी।
2. बूढ़ी काकी ने अपने भतीजे की लंबी-चौड़ी बातें सुनकर अपनी सारी संपत्ति अपने भतीजे के नाम लिख दी थी।
3. सब को यह लगता था कि बूढ़ी काकी केवल खाने के लिए रोती रहती हैं, इसलिए बूढ़ी काकी के रोने पर ध्यान नहीं दिया जाता था।
4. घर में उत्सव होने पर भी बूढ़ी काकी को भोजन नहीं दिया गया, क्योंकि उनके भोजन करने या न करने की फ़िक्र किसी को नहीं थी।
5. रूपा ने भगवान से अपराध क्षमा करने की प्रार्थना की, क्योंकि उसे अपनी गलती का एहसास हो गया था।

लिखित अभिव्यक्ति

1. बूढ़ी काकी के पास धन न होना ही उनकी दयनीय स्थिति का कारण था।
2. बुद्धिराम के बड़े लड़के के तिलक के अवसर पर घर में शहनाई बज रही थी।
3. घर में उत्सव के समय बूढ़ी काकी को किसी ने नहीं पूछा, क्योंकि सब अपने ही कार्यों में बहुत व्यस्त थे।
4. लाडली द्वारा लाई पूड़ियों से काकी का पेट नहीं भरा, तो वह जूठे पत्तलों के पास जा बैठीं और पत्तलों से जूठी पूड़ियों के टुकड़े चुन-चुनकर खाने लगीं।

ख. 1. बचपन का 2. भतीजे के नाम 3. लाडली को 4. पूड़ियाँ

ग. 1. प्रबंध 2. पूड़ियाँ 3. कठिनाई 4. पश्चाताप

भाषा ज्ञान

क. 1. मद + उन्मत्त = मदोंमत्त 2. योग + इंद्र = योगेंद्र
3. दीक्षा + अंत = दीक्षांत 4. सु + अस्ति = सुस्ति
5. मतः + योग = मतयोग 6. लोक + ईश = लोकेश

ख. 1. स्वादिष्ट, खस्ता, सुकोमल 2. बूढ़ी
3. लाल-लाल, फूली-फूली, नरम-नरम 4. बड़े, मसालेदार

ग. 1. कोई (खाकर) उँगलियाँ (चाटता) था, कोई तिरछे नैनों से (देखता) था।
2. रूपा आँगन में पड़ी (सो रही) थी।
3. उनका (रोना-सिसकना) साधारण न था। वे गला (फाड़-फाड़कर) रोती थी।
4. बेचारी अकेली (दौड़ते-दौड़ते) (व्याकुल) हो रही थी।
5. मेहमान मंडली अभी (बैठी हुई) थी।

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।

ख. स्वयं करें।

6 मूर्खों का साथ

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. दरबारियों ने महाराज से प्रार्थना की, कि कभी-कभी वे अपने साथ किसी अन्य व्यक्ति को भी बाहर चलने का अवसर दें।
2. गाँव के किसान ने राजा कृष्णदेवराय की तुलना एक गन्ने से की।
3. राजा कृष्णदेवराय गाँव का भ्रमण करने अपना वेश बदलकर गए।
4. गाँव के किसानों के बीच बैठा बूढ़ा किसान तेनालीराम था।
5. जब गाँव वाले बड़े ही मन से राजा कृष्णदेवराय की आवभगत कर रहे थे, तब अन्य दरबारी मुँह लटकाए ज़मीन कुरेद रहे थे।

लिखित अभिव्यक्ति

1. राजा कृष्णदेवराय जहाँ कहीं भी जाते, अपने साथ तेनालीराम को ज़रूर ले जाते थे। इसी बात से अन्य दरबारी तेनालीराम से बहुत जलते थे।
2. राजा कृष्णदेवराय किसान की गन्ने की बात सुनकर सकपका गए।
3. बूढ़े किसान ने बताया कि महाराज अपनी प्रजा के लिए कोमल और रसीले हैं, किंतु दुष्टों और दुश्मनों के लिए महानतम कठोर हैं।
4. मूर्खों का साथ हमेशा दु:खदायी होता है क्योंकि मूर्ख अपने साथ-साथ दूसरों का भी नुकसान करते हैं।

ख. 1. संतान 2. दु:खदायी 3. गन्ने की तरह 4. तेनालीराम को

ग. 1. हाँ 2. नहीं 3. हाँ 4. नहीं 5. हाँ

भाषा ज्ञान

क. स्वयं करें।

ख.

1.	राजा	–	नृप	सम्राट	2.	गाँव	–	ग्राम	देहात
3.	किसान	–	कृषक	खेतिहर	4.	दुश्मन	–	शत्रु	बैरी
5.	मूर्ख	–	बुद्धू	नासमझ					

ग.

1.	दरबारी	–	दरबारियों	2.	गाँव	–	गाँवों
3.	खेतों	–	खेत	4.	किसान	–	किसानों
5.	संतान	–	संतानें	6.	सवाल	–	सवालों
7.	गन्ना	–	गन्ने	8.	बूढ़ा	–	बूढ़े

रचनात्मक ज्ञान

क. विजय नगर के राजा कृष्णदेवराय के दरबार में एक दिन पड़ोसी देश का दूत आया। वह राजा कृष्णदेवराय के लिए अनेक उपहार भी लाया था। विजय नगर के दरबारियों ने दूत का खूब स्वागत-सत्कार किया। तीसरे दिन जब दूत अपने देश जाने लगा, तो राजा कृष्णदेवराय ने भी अपने पड़ोसी देश के राजा के लिए कुछ बहुमूल्य उपहार दिए।

राजा कृष्णदेवराय दूत को भी उपहार देना चाहते थे, इसलिए उन्होनें दूत से कहा, "हम तुम्हें भी कुछ उपहार देना चाहते हैं। सोना-चाँदी, हीरे-रत्न जो भी तुम्हारी इच्छा हो, माँग लो।"

"महाराज, मुझे यह सब कुछ नहीं चाहिए। यदि देना चाहते हैं, तो कुछ और दीजिए।" दूत बोला।

"महाराज, मुझे ऐसा उपहार दीजिए, जो सुख में, दु:ख में, सदा मेरे साथ रहे और जिसे मुझसे कोई छीन न पाए।" यह सुनकर राजा कृष्णदेवराय चकरा गए।

महाराज सोचने लगे, ऐसा कौन-सा उपहार हो सकता है। तभी राजा कृष्णदेवराय को तेनालीराम की याद आई। वह दरबार में ही मौजूद था।

राजा ने तेनालीराम को संबोधित करते हुए पूछा, "क्या तुम ला सकते हो ऐसा उपहार, जैसा दूत ने माँगा है?"

"अवश्य महाराज, दोपहर को जब यह महाशय यहाँ प्रस्थान करेंगे, वह उपहार इनके साथ ही होगा।" नियत समय पर दूत अपने देश को जाने के लिए तैयार हुआ। सारे उपहार उसके रथ में रखवा दिए गए।

जब राजा कृष्णदेवराय उसे विदा करने लगे तो दूत बोला, "महाराज, मुझे वह उपहार तो मिला ही नहीं, जिसका आपने मुझे वायदा किया था।"

राजा कृष्णदेवराय ने तेनालीराम की ओर देखा और बोले, "तेनालीराम, तुम लाए नहीं वह उपहार?"

इस पर तेनालीराम हँसकर बोला, "महाराज, वह उपहार तो इस समय भी इनके साथ ही है, लेकिन ये उसे देख नहीं पा रहे हैं। इनसे कहिए कि ज़रा पलटकर देखें।"

दूत ने पीछे मुड़कर देखा, मगर उसे कुछ भी नज़र न आया। तभी तेनालीराम ने बताया, कि दूत की परछाई ही दूत का उपहार है। केवल परछाई ही मनुष्य का साथ हर समय देती है। ऐसा सुनकर दूत और राजा कृष्णदेवराय दोनों ही आश्चर्यचकित रह गए।

ख. स्वयं करें।

7 खड़ी बोली का पहला कवि

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. घुड़सवार प्यास से व्याकुल था।
2. पनिहारिनों ने घुड़सवार से कविता की फ़रमाइश की।
3. घुड़सवार ने चारों पनिहारिनों की फ़रमाइश की एक ही कविता सुनाई।

लिखित अभिव्यक्ति

1. खुसरो को अरबी, फ़ारसी, तुर्की और हिंदी भाषाओं का पूर्ण ज्ञान था।
2. एक भाषा जानने वाला दूसरी भाषा के शब्दों के अर्थ जान सके, इसलिए खुसरो ने 'खालकबारी' नामक ग्रंथ लिखा।
3. खुसरो की भाषा आजकल दिल्ली-मेरठ के आस-पास बोली जाने वाली हिंदी भाषा से मिलती है।
4. खुसरो ने अपनी कविताओं को मुकरियाँ, अनमिल छंद और पहेलियों के रूप में लिखा है।

ख. 1. अलग-अलग 2. घुड़सवार 3. दोसखुने
4. मुकरियाँ 5. फ़ारसी

ग.

1.	एक कहानी मैं कहूँ, सुन ले मेरे पूत। बिना परों वह उड़ गया, बाँध गले में सूत।।	पुत्र ! एक कहानी सुनाता हूँ, सुनो! वह गले में धागा बाँधकर बिना पंखों के उड़कर चला गया (पतंग)
2.	जल कर उपजे जल में रहे। आँखों देखा खुसरो कहे।।	जो जलने से पैदा होता है, जो 'जल' शब्द में भी रहता है और खुसरो ने उसे आँखों में देखा है, वह क्या है ? (काजल)
3.	आना-जाना उसका भाए। जिस घर जाए लकड़ी खाए।।	जिसका आना-जाना अच्छा लगता हैं वह जहाँ भी जाती है, लकड़ी खाती है। (आरी)

घ. 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓

भाषा ज्ञान

क.

1.	समान अर्थ वाले	समानार्थक
2.	जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु
3.	गाने की कला में पारंगत	गीतकार
4.	वाद्य यंत्र बजाने में निपुण	वादक
5.	घोड़े पर सवार होने वाला	घुड़सवार
6.	पानी खींचकर लाने वाली स्त्री	पनिहारिन
7.	जिसे कभी भुलाया न जा सके	अविस्मरणीय

ख. 1. व्यक्तिवाचक 2. सर्वनाम 3. विशेषण

ग.

1.	घोड़ा –	(एकवचन)	बहुवचन	स्त्रीलिंग	(पुल्लिंग)
2.	कविता –	(एकवचन)	बहुवचन	(स्त्रीलिंग)	पुल्लिंग
3.	पनिहारिनें –	एकवचन	(बहुवचन)	(स्त्रीलिंग)	पुल्लिंग
4.	खीर –	पुल्लिंग	(स्त्रीलिंग)	(एकवचन)	बहुवचन
5.	फरमाइशें –	पुल्लिंग	(स्त्रीलिंग)	एकवचन	(बहुवचन)

घ.

1. मैं फुटबॉल खेल रहा हूँ।
2. पिताजी अख़बार पढ़ रहे थे।
3. सौरव वहाँ से चला जाएगा।
4. प्रधानाचार्य ने उसे विद्यालय से निकाल दिया था।
5. वे लोग शाम तक घर लौट आएँगे।

ङ.

1. खुसरो ने दिल्ली पर सात बादशाहों का शासन देखा।
2. पहेली में ही उसका उत्तर रहता है।
3. घुड़सवार ने पानी पीने की इच्छा प्रकट की।
4. तुम चारों ने अपनी पसंद की कविता सुनी है।

रचनात्मक ज्ञान

स्वयं करें।

8 शक्ति और क्षमा

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. इस कविता में कवि ने क्षमा और दया के बारे में कहा है, कि जिसके पास शक्ति होती है, उसे ही क्षमा और दया शोभा देती है।
2. कौरवों के सामने पांडवों ने क्षमाशील होकर विनती की थी।
3. श्री राम समुद्र से रास्ता माँग रहे थे।
4. राम के बाण से भंयकर आग धधक उठी।
5. राम का बाण देखते ही समुद्र श्री राम से क्षमा माँगने के लिए प्रकट हो गया।

लिखित अभिव्यक्ति

1. शक्ति ने क्षमा, दया और तप आदि के सामने हार नहीं मानी।
2. कौरवों ने क्षमाशीलता को कायरता समझा।
3. श्री राम समुद्र के सामने बैठकर समुद्र से रास्ता देने के लिए प्रार्थना कर रहे थे।
4. कवि के अनुसार तीर में विनय का गौरव बसता है।
5. जब बल का घमंड किसी व्यक्ति के अंदर जगमगाता है, तभी सहनशीलता, क्षमा और दया की पूजा होती है।

ख. 1. युधिष्ठिर के लिए 2. श्री राम की 3. तीन
4. त्राहि-त्राहि 5. विष

ग. 1. इन पंक्तियों द्वारा कवि कहना चाहता है, कि विनम्रता की चमक बाण में ही बसती है। संधि के वचन उसी को पूजते हैं, जिसके पास विजय की शक्ति होती है।
2. क्षमा उसी सर्प को शोभा देती है, जिसके पास विष होता है। वह सर्प जो दंतहीन और विषरहित है, उससे क्षमा माँगने का कोई लाभ नहीं होता।

घ. 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

भाषा ज्ञान

क. 1. दंतहीन 2. विषहीन 3. प्राणहीन
4. धैर्यहीन 5. प्रश्नहीन 6. गुणहीन

ख.

1.	जग	–	विश्व	संसार	जगत
2.	शक्ति	–	ताकत	बल	सत्व
3.	विनय	–	प्रार्थना	विनती	सुशीलता
4.	कायर	–	असाहसी	डरपोक	भीरू
5.	व्याघ्र	–	बाघ	शेर	सिंह वनराज
6.	नर	–	मनुष्य	आदमी	इंसान

ग.

1.	सरल	–	विरल	2.	दिवस	–	रात्रि
3.	विजय	–	पराजय	4.	कायर	–	निडर / वीर
5.	दिन	–	रात	6.	विष	–	अमृत

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।
ख. स्वयं करें।
ग. स्वयं करें।
घ. स्वयं करें।
ङ. स्वयं करें।

9 भारत की सांस्कृतिक एकता

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. स्वामी शंकराचार्य ने भारत की चारों दिशाओं में अपने मठ स्थापित किए थे। उत्तर में ज्योतिर्मठ, दक्षिण में श्रृंगेरी मठ, पूर्व में गोवर्धन मठ और पश्चिम में शारदा मठ।

2. मुसलमान और ईसाई धर्म एशियाई धर्म होने के कारण भारतीय धर्मों से बहुत कुछ समानता रखते हैं।
3. पारसियों और हिंदुओं में अग्नि की पूजा समान रूप से होती है।
4. स्वास्तिक चिह्न और ओंकार मंत्र हिंदुओं और जैनों में समान रूप से मान्य हैं। जैनों के अणुव्रत, हिंदु-धर्म के योगशास्त्र में 'यम' और बौद्धों के पंचशील प्राय: एक ही हैं।
5. राजसूय, अश्वमेध आदि यज्ञ राज्य की स्थापना के ध्येय से किए जाते हैं।
6. भारतीयों में हीनता की मनोवृत्ति विदेशियों द्वारा पैदा की गई। उन्होनें भारत की एकता को खंडित करके, राज करने के लिए भारतीयों में जात-पात की हीनता पैदा कर दी।
7. भारत-भूमि की नदियों के प्रवाह को प्राकृतिक विभाजन-रेखाएँ बतलाकर तथा भाषा और धर्मों एवं रीति-रिवाजों के भेद को आधार बनाकर, हमारी राष्ट्रीयता के विचार को खंडित करने का अर्थ, हमारे कुछ 'हितचिंतक' इस देश को देश न कहकर, एक उपमहाद्वीप कहने लगे।

लिखित अभिव्यक्ति

1. जायसी, रहीम, रसखान आदि अनेक मुसलमान कवियों ने अपनी वाणी से हिंदी की रसमयता बढ़ाई है।
2. जैन और बौद्ध धर्मों में मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा की शिक्षा समान रूप से प्रतिष्ठित हैं।
3. राजनीति की अपेक्षा धर्म और संस्कृति मनुष्य के हृदय के अधिक निकट है।
4. भारत के पूर्व शासकों ने अपने स्वार्थवश हमारे भेदों को अधिक विस्तार दिया, जिससे हमारे देश में फूट की बेल पनपे और इस भेद-नीति से उनका उल्लू सीधा हो।
5. हमारे भारतीय धर्मों में भेद होते हुए भी उनमें एक सांस्कृतिक एकता है, जो उनके अवरोध की परिचायक है। वहीं त्याग और तप एवं मध्यम मार्ग की संयममयी भावना हिंदू, बौद्ध, जैन और सिख संप्रदायों में समान रूप से विद्यमान है।
6. मनुष्य अपने अवयवों के बाहुल्य और उनके समायोजन और संगठन के कारण जीवनधारियों में सबसे अधिक विकसित और श्रेष्ठ गिना जाता है।
7. भारत की राष्ट्रीयता को चुनौती देने के लिए विदेशी शासकों ने अपने स्वार्थवश हमारे भेदों को अधिक विस्तार किया, जिससे हमारे देश में फूट की बेल पनपे और इस भेद-नीति से उनका उल्लू सीधा हो। हमारे अभेदों की उपेक्षा की गई या उनको नगण्य समझा गया, जिससे हममें हीनता की मनोवृत्ति पैदा हो गई।

ख. 1. एक केंद्रीय भाषा 2. उद्दंडता 3. अपने आपको
4. सांस्कृतिक 5. आवागमन में 6. हिंदू

ग. 1. इन पंक्तियों से आशय है कि हम सभी मनुष्य एक समान हैं। हम सभी का एक ही जाति का व्यक्तित्व है। हम सभी की मनोवृत्ति जीवन का अध्ययन, रहन-सहन, रीति-रिवाज, उठने-बैठने के ढंग, चाल-ढाल, वेश-भूषा, साहित्य और कला में अभिव्यक्त होती है।
2. इन पंक्तियों का अर्थ है कि केंचुआ एक इकाई की तरह है, जिसके शरीर के सारे अंग एक समान ही है। परंतु क्या उसके जीवन को संपन्न कहा जाएगा?

भाषा ज्ञान

क. 1. सरल वाक्य 2. मिश्रित वाक्य 3. संयुक्त वाक्य
4. मिश्रित वाक्य 5. संयुक्त वाक्य

ख. 1. प्रशंसनीय = प्रशंसा + नीय 2. सोचनीय = सोच + नीय
3. माननीय = मान + नीय 4. दयनीय = दया + नीय
5. पूजनीय = पूजा + नीय

ग. 1. संयोगवश 2. संयमवश 3. कारणवश
4. कार्यवश 5. स्वार्थवश

घ. 1. र् + आ + ष् + ट् + र् + ई + य् + अ + त् + आ राष्ट्रीयता
2. प् + र् + आ + क् + ऋ + त् + इ + क् + अ प्राकृतिक
3. न् + इ + म् + इ + त् + त् + अ निमित्त
4. र् + आ + ज् + अ + न् + ई + त् + इ राजनीति
5. स + अं + य् + अ + म् + अ + म् + अ + य् + ई संयममयी

ङ. 1. जान = प्राण सभी को अपनी जान की चिंता होती है।
जान = जानना तुम भी यह सच जान लो।
2. फूट = मतभेद अंग्रेज़ो ने हमारे देश में फूट डालने की कोशिश की थी।
फूट = फूटना बूढ़ी काकी का मटका फूट गया।
3. जल = पानी महाराज को ठंडा जल पिलाओ।
जल = जलना इस आग में मेरी सारी किताबें जल गईं।
4. उत्तर = जवाब सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं।
उत्तर = एक दिशा यह गमला उत्तर दिशा में रख दो।
5. पूर्व = पहले डॉ. कलाम पूर्व राष्ट्रपति थे।
पूर्व = एक दिशा सूर्य पूर्व दिशा से निकलता है।

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।
ख. स्वयं करें।
ग. स्वयं करें।
घ. स्वयं करें।
ङ. स्वयं करें।

10 बिजली और ऊर्जा की बचत

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. हमारे देश में बहुत-से शहर व गाँव ऐसे हैं, जहाँ केवल कुछ घंटे के लिए ही बिजली आती है।

2. जहाँ बिजली कम आती है, वहाँ के लोग मोमबत्ती या दीए से उजाला करते हैं।
3. सी॰ एफ॰ एल॰ के प्रयोग से बिजली की बचत की जा सकती है।

लिखित अभिव्यक्ति

1. कंप्यूटर गेम खलेने के बाद उसे बंद कर दें। फ्रिज़ को अधिक देर तक खुला न छोड़ें। टी॰वी॰ देखने के बाद उसे बंद कर दें। सारे काम समाप्त होने के बाद बिजली बंद कर दें।
2. एक ही जगह जाने के लिए गाड़ी को दूसरों के साथ प्रयोग करने को पूल सिस्टम कहा जाता है।
3. सरकार ने पेट्रोल की बचत को ध्यान में रखकर व ट्रैफ़िक जाम को कम करने के लिए फ्लाइओवर बनाए हैं। दिल्ली जैसे महानगर में आजकल सूर्य की रोशनी का उपयोग करके सौर ऊर्जा का प्रयोग भी किया जा रहा है।
4. सोलर कुकर, सोलर लैंप, हीटर, इनवर्टर, सोलर पंप, सोलर वाटर हीटर, सोलर पावर्ड वॉशर और ड्रायर, मॉसक्यूटो मशीन आदि।
5. बायोगैस का प्रयोग गाँवों में अधिक हो सकता है।

ख. 1. दोनों 2. दोनों 3. सऊदी अरब

ग. 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

घ. 1. टी॰ वी॰ 2. पेट्रोल 3. सूर्य

भाषा ज्ञान

क.

1.	वह मेरे लिए फल लाया।	संप्रदान कारक
2.	माता जी ने मुझे गहने दिए।	कर्त्ता कारक
3.	बच्चा कुत्ते से डरता है।	करण कारक
4.	राम का भाई बीमार है।	संबंध कारक
5.	मैंने फ़ोन मेज़ पर रखा है।	अधिकरण कारक
6.	बच्चों ! परिश्रम सफ़लता की कुंजी है।	संबंध कारक

ख. स्वयं करें।

ग.

1.	मालूम	–	अनभिज्ञ	4.	विकास	–	अविकास
2.	स्वस्थ	–	अस्वस्थ	5.	बचत	–	खर्च
3.	गाँव	–	शहर	6.	आसानी	–	मुश्किल

घ.

1.	सामान	–	हमें अपने सामान का ध्यान रखना चाहिए।
2.	योगदान	–	देश के विकास में हम सभी का योगदान होता है।
3.	विकास	–	हमारा देश दिन-रात विकास कर रहा है।
4.	साइकिल	–	यह साइकिल की सवारी है।
5.	मोमबत्ती	–	मोमबत्ती की रोशनी में पढ़ने से आँखें खराब हो जाती हैं।
6.	बिजली	–	हम सभी को बिजली की बचत करनी चाहिए।

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।

ख. स्वयं करें।

ग. स्वयं करें।

11 सच्चे का बोलबाला, झूठे का मुँह काला

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. राजा का नाई धूर्त व्यक्ति था।
2. एक बार मंत्री ने नाई की किसी हरकत से नाराज़ होकर उसे झाड़ पिला दी।
3. नाई ने मंत्री के खिलाफ़ राजा को भड़काने की योजना बनाई।
4. पंडित ने राजा को बताया स्वर्ग में उनके माता-पिता को सभी सुख-सुविधाएँ प्राप्त हैं, पर एक दु:ख उन्हें सताता रहता है, कि उनका कोई सलाहकार स्वर्ग में नहीं है। किसी ऐसे व्यक्ति को उनके पास भिजवाया जाए, जो यहाँ उनका विश्वस्त सलाहकार और रोचक बातें करने वाला व्यक्ति रहा हो।
5. राजा का फ़ैसला सुनकर मंत्री घर जाकर औंधे मुँह पलंग पर लेट गया।

लिखित अभिव्यक्ति

1. पंडित ने राजा को बताया, कि उनके किसी विश्वस्त व्यक्ति को स्वर्ग भेज दिया जाए।
2. मंत्री की पुत्री ने सलाह दी, कि सब ठीक हो जाएगा। आप राजा से एक महीने का समय माँग लें।
3. मंत्री दो महीने बाद दरबार में प्रकट हुआ।
4. मंत्री ने बताया, कि स्वर्ग में नाई नहीं होते। उनके माता-पिता को एक नाई की आवश्यकता है।
5. नाई अपनी सज़ा से बचने के लिए घर से भाग रहा था।

ख. 1. फाँसी की 2. नाई 3. देश-निकाला
4. पुत्री ने 5. मंदबुद्धि

ग. 1. मंत्री ने राजा से 2. मंत्री ने राजा से 3. पुत्री ने मंत्री से
4. मंत्री ने पत्नी से 5. पंडित ने राजा से

भाषा ज्ञान

क. 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग
4. स्त्रीलिंग 5. पुल्लिंग

ख. स्वयं करें।

ग. 1. माता-पिता – माता और पिता
2. सिखाया-पढ़ाया – सिखाया और पढ़ाया
3. राजदरबार – राजा का दरबार
4. सुख-सुविधा – सुख और सुविधा

घ. 1. युवा – युवक 2. गरीब – गरीबी
2. राष्ट्र – राष्ट्रीय 3. मणि – मणिक
5. इन्सान – इंसानियत 6. ईमानदार – ईमानदारी
7. चतुर – चतुराई 8. थकना – थकान

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।

ख. स्वयं करें।

ग. स्वयं करें।

घ. स्वयं करें।

12 भगत सिंह के पत्र

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. प्रस्तुत पत्र भगत सिंह द्वारा उनके पिता को लिखे गए हैं।
2. भगत सिंह के यज्ञोपवीत के समय ऐलान किया गया था, कि उन्हें खिदमते-वतन के लिए वक्फ़ कर दिया गया है।
3. भगत सिंह वालिदा साहिबा को साथ लाने से मना करते हैं, क्योंकि उनकी वालिदा साहिबा उन्हें जेल में देखकर रो देंगी।
4. भगत सिंह ने अपने पिता को पत्र कांग्रेस के दफ़्तर के पते पर लिखा।

लिखित अभिव्यक्ति

1. भगत सिंह ने अपने प्रथम पत्र में कहा है कि मैंने अपना जीवन अपनी भारत माता को समर्पित किया है। उन्होनें बापू जी का संबोधन यज्ञोपवीत के वक्त किए गए ऐलान के संबोधन में किया है।
2. दूसरे पत्र में भगत सिंह ने मुकदमे की बात की है।
3. दूसरे पत्र में भगत सिंह ने गीता रहस्य, नेपोलियन की मोटी सवानह-उमरी, अंग्रेज़ी की नॉवेल की चर्चा की है।
4. भगत सिंह अपनी मातृभूमि से बहुत प्रेम करते थे, इसलिए उन्होनें स्वयं को स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दिया।
5. भगत सिंह ने अपने पिता को अकेले मिलने के लिए बुलाया, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि उनकी माता वहाँ आएँ और जेल में भगत सिंह को देखकर दु:खी हों।

ख. 1. द्वितीय 2. 26 अप्रैल, 1929 3. दिल्ली

ग. 1. प्रतीज्ञा 2. ड्रामा 3. फ़िक्र 4. मुलाकात 5. अच्छा

भाषा ज्ञान

क.

1.	उम्मीद	–	उम्मीदें	2.	वीर	–	वीर
3.	हालात	–	हालात	4.	प्रतिज्ञा	–	प्रतिज्ञाएँ
5.	कोशिश	–	कोशिशें	6.	हवालात	–	हवालात
7.	उसूल	–	उसूल	8.	वकील	–	वकील

ख. स्वयं करें।

ग. 1. उसूल – जीवन में एक उसूल होना आवश्यक है।

2. ताबेदार – वह बालक अपने माता-पिता का ताबेदार है।
3. फ़िक्र – मेरी फ़िक्र करने की ज़रुरत नहीं है।
4. मशवरा – मैंने वकील से सारा मशविरा कर लिया है।
5. इंतज़ाम – यहाँ खाने पीने का अच्छा इंतज़ाम है।
6. जेल – चोर को जेल में बंद कर दिया गया।

घ. 1. ख़्वाहिशात – इच्छा 2. निहायत – बिल्कुल
3. हवालात – जेल 4. वक़्त – समय
5. तकलीफ़ – परेशानी 6. वालिद – पिता
7. खास – अनमोल

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।

ख. स्वयं करें।

13 अनमोल समय

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. आलस मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।
2. विद्यार्थियों को अपने जीवन में समय का मूल्य पहचानना चाहिए।
3. समय पर अपने सभी कार्यों को कर के हम अपनी परेशानियों से छुटकारा पा सकते हैं।

लिखित अभिव्यक्ति

1. समय का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है।
2. आलस्य के कारण हम अपना कार्य समय पर पूरा नहीं कर सकते, जिसके कारण हमें बहुत-सी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है।
3. प॰ नेहरू और गाँधी जी के जीवन से हमें यह प्रेरणा मिलती है, कि हमें अपने सभी कार्यों को समय पर समाप्त करना चाहिए और समय का सदुपयोग करना चाहिए।
4. समय का पालन करके हम अपने सभी कार्यों को अच्छे से कर सकते हैं और अपने समय को बचाकर सदुपयोग कर सकते हैं।
5. समय का विभाजन करने का अर्थ है, कि हम अपने सभी कार्यों को करने के लिए एक निश्चित समय तय कर लें और उसे उसी वक़्त समाप्त कर दें।
6. विद्यार्थियों के लिए समय-विभाजन का बहुत महत्त्व है। विद्यार्थियों को समय का पालन करना चाहिए। उन्हें अपने समय को इस प्रकार विभाजित कर लेना चाहिए, कि वे अपने सभी कार्यों को अच्छे से और सही समय पर पूरा कर सकें।

ख. 1. कीमती 2. आलस्य 3. प्रतिदिन 4. व्यस्त 5. प्रतीक्षा

ग. 1. समय 2. सभा-सम्मेलनों 3. समय
4. सदुपयोग 5. महत्त्व

घ. 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

भाषा ज्ञान

क.
1. श्याम ध्यानपूर्वक पढ़ रहा है। — ध्यानपूर्वक
2. चीता तेज़ दौड़ता है — तेज़
3. वह परसों केरल जाएगा। — परसों
4. रवि ने दूध अधिक पी लिया। — अधिक
5. माता जी धीरे-धीरे चलती हैं। — धीरे-धीरे
6. थोड़ा कम खाया करो। — कम

ख. 1. सुख - दुःख 2. लंबा - छोटा 3. गलत - सही
4. संभव - असंभव 5. रोना - हँसना 6. सफ़लता - असफ़लता

ग. 1. व्यकती × व्यक्ति 2. सदिपुयोग × सदुपयोग
3. आलिसपन × आलसीपन 4. दैनीक × दैनिक
5. सिकायत × शिकायत 6. अश्चर्य × आश्चर्य

घ. 1. समय – वक़्त काल 2. पत्र – ख़त समाचार
3. उत्तर – जवाब एक दिशा 4. वक़्त – समय काल
5. रात – रात्रि निशा 6. शरीर – अंग तन

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।

ख. स्वयं करें।

14 काँटों में राह बनाते हैं

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. विपत्ति कायर को दहलाती है।
2. काँटों में विद्वान राह बनाते हैं।
3. बत्ती नहीं जलाने वाला रोशनी नहीं पाता है।

लिखित अभिव्यक्ति

1. 'सूरमा' क्षत्रिय को कहते हैं।
2. विघ्न-बाधाएँ साहसी व्यक्ति के सामने नहीं ठहरतीं क्योंकि वह उनका डटकर सामना करता है।
3. यह कविता हमें संदेश देती है कि हमें विपत्ति में नहीं घबराना चाहिए, बल्कि उनका डटकर सामना करना चाहिए।
4. स्वयं करें।

ख. 1. कायर को 2. विचलित 3. पत्थर 4. गुण

ग. 1. है कौन **विघ्न ऐसा जग मे**,
टिक सके आदमी के मग में।
खम ठोक **खेलता है जब नर**,
पर्वत के जाते पाँव उखड़।

2. गुण बड़े **एक से एक प्रखर**,
हैं छिपे मानवों के भीतर।
मेहंदी में **जैसे लाली हो**,
वर्तिका बीच उजियाली हो।

घ. 1. खम ठोकना (कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार रहना)
क्षत्रिय हमेशा खम ठोक कर खड़े रहते हैं।

2. पत्थर का पानी बनना (कठिन कार्य का सरल हो जाना)
मेहनत करने पर पत्थर भी पानी बन जाता है।

3. पाँव उखड़ना (हार जाना)
युद्ध के क्षेत्र में वीर अपने दुश्मनों के पाँव उखाड़ देते हैं।

4. गले लगाना (प्यार करना)
हमें अपने शत्रुओं को भी गले लगाना चाहिए।

भाषा ज्ञान

क. 1. परिमाणवाचक विशेषण 2. गुणवाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण 4. परिमाणवाचक विशेषण
5. परिमाणवाचक विशेषण

ख. 1. रोशनी – अँधेरे को रोशनी ही समाप्त कर सकती है।
2. गुण – हम सभी के अंदर कोई-न-कोई गुण छिपे होते हैं।
3. धीरज – मुसीबत के समय हमें धीरज से काम लेना चाहिए।
4. विपत्ति – विपत्ति में कायर ही घबराते हैं।

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।

ख. स्वयं करें।

15 वीर बालक

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. तैमूर एक मंगोल आक्रमणकारी था।
2. कल्याणी ने अपने पुत्र बलकरन के जन्मदिन के अवसर पर अच्छी-अच्छी मिठाइयाँ बनाई थीं।
3. बलकरन एक छोटा बालक था।
4. कल्याणी ग्रामीणों के साथ नहीं जा रही थी, क्योंकि उसे अपने पुत्र की चिंता हो रही थी।
5. हिंदू ग्रामीणों ने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि सुजान का घर खास रास्ते से हटकर कोने में था और डाकू सीधे रास्ते से आ रहे थे।

लिखित अभिव्यक्ति

1. कल्याणी एक ग्रामीण स्त्री थी।
2. खीर बनाने के लिए कल्याणी दूध का इंतज़ार कर रही थी।
3. जफ़र अली के अनुसार उसका मुख्य उद्देश्य सोना-चाँदी लूटना था।
4. तैमूर तीन दिन से भूखा-प्यासा था।
5. तैमूर ने शाम तक अमरकोट पहुँचने का आदेश दिया था।
6. बलकरन ने तैमूर को अपने गाँव से बाहर जाने की इच्छा व्यक्त की।
7. तैमूर बलकरन की बहादुरी से बहुत प्रभावित हुआ इसलिए उसने बलकरन को सलाम किया।

ख. 1. चाकू 2. सिपाही 3. मिठाइयाँ
4. तलघर में 5. सुजान

ग. 1. बलकरन ने अपनी माँ से कहा। 2. मुसलमान ग्रामीणों ने कल्याणी से कहा।
3. मुबारक ने अलीबेग से कहा। 4. बलकरन ने तैमूर से कहा।
5. बलकरन ने तैमूर से कहा।

भाषा ज्ञान

क.

		प्रविशेषण	**विशेषण**	**विशेष्य**
1.	बिल्कुल ताज़ी मिठाइयाँ –	बिल्कुल	ताज़ी	मिठाइयाँ
2.	छोटा-सा बहादुर दोस्त –	छोटा-सा	बहादुर	दोस्त
3.	पूरा बेवकूफ़ आदमी –	पूरा	बेवकूफ़	आदमी
4.	बहुत ऊँचा पेड़ –	बहुत	ऊँचा	पेड़
5.	बेहद स्वादिष्ट खाना –	बेहद	स्वादिष्ट	खाना

ख. 1. स्तब्ध – स्तब्धता 2. दृढ़ – दृढ़ता
3. महान – महानता 4. अज्ञान – अज्ञानता

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।
ख. स्वयं करें।
ग. स्वयं करें।
घ. स्वयं करें।
ङ. स्वयं करें।

16 तिवारी का तोता

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. तिवारी का तोता पिंजरे में रहता था और वह तिवारी की ज़ुबान में बातें करता था।
2. जंगली तोता तिवारी के तोते को आज़ादी का महत्त्व समझाना चाहता था।

3. तिवारी का तोता यह नहीं समझ पा रहा था कि पिंजरे के बाहर का जीवन बहुत अच्छा होता है।
4. जंगली तोते ने तिवारी के तोते को समझाया, "तू मालिक की बात सुनता है, और मालिक की बोली बोलता है। सिर्फ़ एक दिन अपने मालिक की बात न सुन और उसकी बात का उसकी बोली में जवाब न दे और फिर देख, क्या होता है!"
5. पिंजरे के तोते ने तय किया कि वह मालिक की बात नहीं सुनेगा।

लिखित अभिव्यक्ति

1. तिवारी के तोते ने बताया कि उसका मालिक उस पर मेहरबान है, और यह उसकी खुशकिस्मती है कि उसने उसे पिंजरा बना दिया। वरना कौन उसे पानी पिलाता, खाना खिलाता, रात के जाड़े और अँधेरे में उसकी रक्षा करता।
2. जंगली तोते ने तिवारी के तोते से कहा, "तुम पर लानत है! तेरी आज़ादी का रंग मुर्दा हो चुका है, और आँखे अंधी हो गई हैं। वरना, तू इस पिंजरे की तारीफ़ न करता, जिसने तेरी देह को ही क़ैद नहीं किया, तेरी आत्मा को भी क़ैद कर लिया है। मैं तुझे जंगल से यह बताने आया हूँ कि तू अभागा है।"
3. पिंजरे का तोता समझता था कि उसे वहाँ खाने-पीने का सारा सामान उपलब्ध है, उसे किसी तरह से डरने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए वह स्वयं को कैदी नहीं समझता था।
4. पिंजरे के तोते ने जब तिवारी के बेटे की बात का जवाब नहीं दिया, तो वह लोहे की सींक को पिंजरे में डालकर तोते के शरीर पर चुभोता रहा।
5. जंगली तोते ने पिंजरे के तोते से ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि वह आज़ादी का महत्त्व जानता था। वह जानता था कि जिस दिन पिंजरे का तोता अपने मालिक की बात सुनने को मना कर देगा, उस दिन उसका मालिक ही उसका दुश्मन बन जाएगा।
6. पिंजरे का तोता स्वयं को खुशकिस्मत समझता रहा क्योंकि वह सोचता था, कि उसका मालिक उससे बहुत प्यार करता है।
7. तिवारी ने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि उसे लगता था कि उसके तोते की जान जंगली तोते के कारण गई है।

ख. 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ 6. ✓

भाषा ज्ञान

क. 1. मैं (नहाकर) खाना खाऊँगा। 2. (दौड़कर) आओ।
3. चोर (भागकर) एक घर में घुस गया। 4. जंगली तोते को गुलेल से (मारकर) उड़ा दो।
5. तोता गरदन पर घाव (खाकर) एक तरफ़ हट गया।
6. तिवारी के बेटे ने सींक (चुभोकर) कहा– बोलता है या नहीं ?

ख. 1. जातिवाचक 2. व्यक्तिवाचक 3. व्यक्तिवाचक
4. व्यक्तिवाचक 5. व्यक्तिवाचक 6. भाववाचक

ग. 1. खुशकिस्मती – खुश + किस्मती 2. बुराई – बुरा + ई
3. आज़ादी – आज़ाद + ई 4. सभ्यता – सभ्य + ता
5. जंगली – जंगल + ई 6. बेरहमी – बेरहम + ई

घ. 1. असहाय – यह दर्द मुझे असहाय है।
2. अदृश्य – आत्माएँ अदृश्य होती हैं।
3. अबला – अबला स्त्री पर प्रहार मत करो।
4. अनाथ – यह बालक अनाथ है।
5. अविलंब – अविलंब ही हर बीमारी का इलाज कराओ।
6. अप्रिय – मुझे यह क़ैद अप्रिय है।

ङ. 1. वह थककर सो गया।
2. पुलिस ने आंसू गैस छोड़कर भीड़ को तितर-बितर किया।
3. तैराक ने तैरकर नदी पार की।
4. वरुण उठकर चल पड़ा।
5. वह दुकान बंद करके घर चला गया।

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।
ख. स्वयं करें।
ग. स्वयं करें।
घ. स्वयं करें।
ङ. स्वयं करें।

17 मेरा नया बचपन

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. इस कविता की रचयिता सुभद्रा कुमारी चौहान हैं।
2. बच्ची हाथ में मिट्टी लेकर आई थी।
3. कवयित्री बच्ची के साथ खेलती-खाती और तुतलाती हैं।

लिखित अभिव्यक्ति

1. कवयित्री ने अपना बचपन अपनी बेटी में पाया। जब वह तुतलाती है और खेलती है, तब उसे अपने बचपन की याद आती है।
2. जब बच्ची ने अपनी माँ से मिट्टी खाने को कहा, तब माँ का हृदय प्रफुल्लित हो गया।
3. कवयित्री फिर से बच्ची बनना चाहती थी क्योंकि उसे बचपन बहुत प्यारा था।
4. अपनी पुत्री के बालपन को देखकर कवयित्री को बचपन की याद आ रही थी।

ख. 1. मिट्टी 2. बच्ची 3. बच्ची में 4. बचपन की

ग. 1. रोना और **मचल जाना भी**,
क्या आनंद दिखाते थे।
बड़े-बड़े **मोती-से आँसू**,
जयमाला पहनाते थे।

2. माँ ओ ! **कहकर बुला रही थी**,
मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुँह में **कुछ लिए हाथ में**,
मुझे खिलाने आई थी।

भाषा ज्ञान

क. 1. रेखा + अंकित – रेखांकित
2. न्याय + आलय – न्यायालय
3. निः + मल – निर्मल
4. सम् + कल्प – संकल्प
5. हित + ऐषी – हितैषी

ख. 1. यादें – याद
2. माला – मालाएँ
3. फूल – फूल
4. बच्ची – बच्चियाँ
5. खुशी – खुशियाँ
6. आँसू – आँसू

ग. 1. माँ – माता जननी
2. फूल – कुसुम पुष्प
3. आनंद – खुशी उमंग
4. हाथ – हस्त कर
5. घर – गृह आवास

रचनात्मक ज्ञान

स्वयं करें।

18 अकबरी लोटा

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. पत्नी द्वारा रुपये माँगने पर लाला झाऊलाल का जी बैठ गया, क्योंकि इतने पैसे उनके पास नहीं थे।
2. बिलवासी मिश्रा ने झाऊलाल को आश्वासन दिया, कि जल्द ही ढाई सौ रुपये का इंतज़ाम हो जाएगा।
3. बिलवासी मिश्र का इंतज़ार करते हुए झाऊलाल सोच रहे थे, कि यदि बिलवासी मिश्र नहीं आए या फिर रुपयों का इंतज़ाम न हो सका, तो वे क्या करेंगे।
4. झाऊलाल के हाथ से छूटकर लोटा दुकान के सायबान से टकराया और फिर एक अंग्रेज़ को भिगोते हुए उसी के बूट पर आ गिरा।
5. बिलवासी मिश्र और अंग्रेज़ की बातचीत से झाऊलाल क्रोधित हो रहे थे, क्योंकि उन्हें लग रहा था, कि बिलवासी मिश्र उन्हें एक नई मुसीबत में डाल रहे हैं।

लिखित अभिव्यक्ति

1. जब पत्नी ने अपने भाई से पैसे माँगने की बात कही, तो इसी बात पर झाऊलाल तिलमिला उठे।
2. रुपयों का प्रबंध न होने पर झाऊलाल बिलवासी मिश्र के पास गए।
3. प्यास लगने पर झाऊलाल ने अपनी पत्नी को आवाज़ दी।

4. लाला झाऊलाल को वह लोटा इसलिए नापंसद था क्योंकि उसकी बनावट टेढ़ी-मेढ़ी थी।
5. पं॰ बिलवासी मिश्र ने आँगन में आकर अंग्रेज़ को कुर्सी पर बिठाया और उसकी चोट का हाल पूछा।
6. पं॰ बिलवासी ने झाऊलाल के लिए पैसों का इंतज़ाम करने के लिए उनसे लोटा खरीदने की बात की।
7. अंग्रेज़ ने लोटे को अकबरी लोटा समझकर खरीदा।

ख. 1. अपना रुपया सहेजना 2. जहाँगीरी अंडा 3. लोटे में
4. पाँच सौ रुपये में 5. बालकनी 6. ढाई सौ

ग. 1. इन पंक्तियों का अर्थ है कि लोटे के गिरते ही झाऊलाल बहुत ही डर गए थे। लोटा तिमंज़िले से गिरा था। इतनी ऊँचाई से लोटा गिरकर किसी को भी लग सकता था। यहाँ तक कि उस लोटे का वार इतना अधिक होता कि उसकी चोट से किसी की मृत्यु भी हो सकती थी।
2. इन पंक्तियों का अर्थ है कि जब झाऊलाल ने लोटे को अंग्रेज़ के पास गिरा हुआ देखा तो वे समझ गए कि इसी लोटे के पानी के कारण वह अंग्रेज़ गीला हुआ है।

घ. 1. बिलवासी मिश्र ने अंग्रेज़ से कहा। 2. बिलवासी मिश्र ने अंग्रेज़ से कहा।
3. बिलवासी मिश्र ने अंग्रेज़ से कहा।

भाषा ज्ञान

क. 1. सप्तसिंधु – सात सिंधुओं का समूह
2. दोपहर – दो पहरों का समूह
3. सप्ताह – सात दिनों का समूह

ख. 1. कर्म कारक 2. अधिकरण कारक
3. अपादान कारक 4. संबंध कारक

ग. 1. हँसी – हँसी-खेल 2. उधेड़ – उधेड़-बुन
3. दाएँ – दाएँ-बाएँ 4. ऊपर – ऊपर-नीचे
5. अंदर – अंदर-बाहर 6. आगे – आगे-पीछे

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।

ख. स्वयं करें।

19 भक्ति-पद

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. मीराबाई का श्री कृष्ण के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है।
2. मीरा कुल की चिंता छोड़कर निश्चिंत हो गई हैं।
3. मीरा को प्रेम रूपी बेल से आनंदरूपी फल प्राप्त हो रहा है।

4. श्री कृष्ण अपनी माता से कह रहे हैं कि उन्होनें माखन नहीं खाया है।
5. सुबह होते ही श्री कृष्ण को गायों के पीछे भेज दिया जाता है।
6. जब श्री कृष्ण ने अपनी लाठी और कंबल लौटाने की बात कही तो माता यशोदा हँस पड़ी।

लिखित अभिव्यक्ति

1. मीराबाई अपने पति की पहचान मुकुट पर मोर पंख होने की बताती है।
2. मीरा ने प्रेम की बेल बोकर उसे आँसुओं के जल से सींचा है।
3. शाम तक श्री कृष्ण गायों के पीछे भटकते रहते हैं।
4. हाथ छोटे होने के कारण श्री कृष्ण माखन की मटकी नहीं पा सकते थे।
5. श्री कृष्ण ग्वाल बालकों को अपना दुश्मन बता रहे हैं।
6. अंत में माता यशोदा हँसकर श्री कृष्ण को गले से लगा लेती हैं।

ख. 1. परेशान करना 2. लाठी और कंबल 3. मधुबन

ग. 1. इन पंक्तियों द्वारा श्री कृष्ण अपनी मैया से कह रहे हैं, कि तेरे दिल में जरुर कोई भेद है, जो मुझे पराया समझ कर मुझ पर संदेह कर रही है। ये ले, अपनी लाठी और कंबल ले ले, तूने मुझे बहुत नाच नचा लिया है।

2. इन पंक्तियो द्वारा मीराबाई कह रही है, कि उसने अपने परिवार की चिंता छोड़ दी है। मेरे ना पिता है, ना माता, ना ही कोई भाई। संतों के संग बैठ-बैठकर उसने सभी प्रकार की लोक लाज खो दी है।

भाषा ज्ञान

क. 1. कुल – परिवार कुनबा कुटुंब
2. बालक – लड़का बच्चा कुमार

ख. 1. प्रेम – **द्वेष** 2. भोर – **रात**
3. **मित्रता** – बैर 4. **अपना** – पराया

ग. 1. वंशी धारण करने वाला – वंशीधर
2. गिरि को धारण करने वाला – गिरिधर
3. गायें चराने वाला – ग्वाला
4. मन को मोहने वाला – मनमोहन

घ. 1. माखन – मक्खन 2. मोरी – मेरी
3. जानि – जानना 4. लै – लो

रचनात्मक ज्ञान

क. मीराबाई का जन्म संवत 1504 में जोधपुर में कुरकी नामक गाँव में हुआ था। कुड्की में मीराबाई का ननिहाल था। उनके पिता का नाम रत्नसिंह था। ये बचपन से ही कृष्णभक्ति में रुचि लेने लगी थीं। इनका विवाह उदयपुर के महाराणा कुंवर भोजराज के साथ हुआ था जो उदयपुर के महाराणा सांगा के पुत्र थे। विवाह के कुछ समय बाद ही उनके पति का देहान्त हो गया। पति की मृत्यु के बाद उन्हें पति के साथ सती करने का प्रयास किया गया किंतु मीरा इसके लिए तैयार नहीं हुईं। वे संसार की ओर से विरक्त हो गयीं और साधु-संतों की संगति में हरिकीर्तन करते हुए अपना समय व्यतीत करने लगी। पति के परलोकवास के बाद इनकी भक्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। ये मंदिरों में जाकर वहाँ मौजूद कृष्णभक्तों के सामने कृष्णजी की मूर्ति के आगे नाचती रहती थीं। मीराबाई का कृष्णभक्ति में नाचना और गाना राज परिवार

को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने कई बार मीराबाई को विष देकर मारने की कोशिश की। घरवालों के इस प्रकार के व्यवहार से परेशान होकर वह द्वारका और वृंदावन गईं। वह जहाँ जाती थीं, वहाँ लोगों का सम्मान मिलता था। लोग उनको देवियों के जैसा प्यार और सम्मान देते थे। द्वारका में संवत् 1558 ईस्वी में वो भगवान कृष्ण की मूर्ति में समा गईं।

ख. स्वयं करें।

20 वरदान

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. ब्राह्मण के परिवार में उसकी बूढ़ी अंधी माँ और पत्नी थी।
2. ब्राह्मण तपस्या करने जंगल में चला गया।
3. शंकरजी ने ब्राह्मण को एक वरदान माँगने को कहा।
4. ब्राह्मण की माँ ने शिवजी से अपनी आँखों की रोशनी माँगने को कहा।
5. अंत में ब्राह्मण ने अपने मित्र की बात मानी।

लिखित अभिव्यक्ति

1. शिवजी के वरदान से ब्राह्मण की माँ की आँखो की रोशनी, उसके और उसकी पत्नी को लड़का और उसके घर में धन-धान्य का आगमन हो गया।
2. ब्राह्मण के मित्र ने उसे रोता हुआ देखकर उसके रोने का हाल पूछा।
3. ब्राह्मण की पत्नी ने महादेव से अपने लिए पुत्र माँगने को कहा।
4. महादेव ने ब्राह्मण को घर जाने की आज्ञा दी क्योंकि वह अपनी माँ और पत्नी से वरदान के संबंध में सुझाव माँगना चाहता था।
5. ब्राह्मण ने जंगल में जाकर बारह वर्षों तक महादेव की पूजा की।
6. घर में कोई संतान नहीं थी और ब्राहमण की माँ अंधी थी, इसलिए दोनों सास-बहू झगड़ा करती थीं।

ख. 1. महादेव 2. पत्नी ने 3. मित्र की

ग. 1. शादी 2. ब्राह्मण 3. आँखे 4. मित्र 5. माँ

घ. 1 ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓ 6. ✗

भाषा ज्ञान

क.	**शब्द**	**प्रत्यय/उपसर्ग**	**मूल शब्द**
1.	वरदान	दान	वर
2.	शीघ्रता	ता	शीघ्र
3.	चतुराई	आई	चतुर
4.	दूधवाला	वाला	दूध
5.	उपयुक्त	उप	युक्त
6.	तत्पश्चात्	तत्	पश्चात्

ख. 1. ब्राह्मण – ब्राह्मणी 2. बूढ़ी – बूढ़ा
3. सास – ससुर 4. बहू – वर
5. महादेव – महादेवी 6. माँ – पिता
7. पुत्र – पुत्री 8. लड़का – लड़की

ग. 1. गाँव – गाँव 2. माँ – माँए
3. वर्ष – वर्षों 4. वरदान – वरदान
5. घर – घर 6. आँख – आँखें
7. पुत्र – पुत्र 8. मित्र – मित्र

घ. 1. गुत्थम – गुत्थम-गुत्थी 2. मार – मार-धाड़
3. थक – थक-हार 4. इच्छा – इच्छा-पूर्ति
5. लहू – लहू-लुहान 6. धन – धन-धान्य
7. हँसी – हँसी-खुशी 8. सूझ – सूझ-बूझ

ङ. 1. "अरे! आप क्यों रो रहे हैं आपको क्या दु:ख है?"
2. "क्या बात है? तुम इस तरह क्यों चिल्ला रहे हो?"
3. पत्नी बोली- "देखो, तुम्हारी माँ बहुत बूढ़ी है।"
4. "माँ! अब तुम बताओ, मुझे शंकर जी से क्या माँगना चाहिए?"
5. ब्राह्मण ने कहा- "महादेव! मेरी समझ में कुछ नहीं आता, कि मैं आपसे क्या माँगू!"

च. 1. वह (घने) जंगल में चला गया। गुणवाचक विशेषण
2. ब्राह्मण की (एक) बूढ़ी माँ थी। संख्यावाचक विशेषण
3. गाँव में (एक) निर्धन ब्राह्मण रहता था। संख्यावाचक विशेषण
4. शंकर जी ने (चमकती) आँखों से ब्राह्मण को देखा। गुणवाचक विशेषण
5. उसकी (सच्ची) लगन से महादेव प्रसन्न हुए। गुणवाचक विशेषण

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।

ख. स्वयं करें।

21 समय

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. समय से कवि का तात्पर्य है कि वह वक्त जो अभी चल रहा है।
2. कवि सलाह दे रहा है, कि जो भी काम करना है, अभी कर लेना चाहिए।
3. संदेह को भगा कर आत्मा पर विश्वास किया जाता है। ऐसा करने से सभी कामों को करने में मन लगता है और वे काम सफ़ल भी होते हैं।

4. इसका अभिप्राय है कि एक-एक पल बहुत कीमती होता है। एक-एक पल का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व होता है।

लिखित अभिव्यक्ति

इन पंक्तियों द्वारा कवि कहना चाहता है, कि जो वक्त अभी चल रहा है, वह बहुत अच्छा है और इस वक्त को दोबारा पाना बहुत मुश्किल है, इसलिए इसे व्यर्थ में गंवाना नहीं चाहिए। इस समय को खोकर बहुत पछताओगे। जैसे-यदि समय रहते हम पढ़ेंगें नहीं, तो परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त नहीं होंगे और हम पछताते रहेंगे।

ख. 1. परमार्थ के कार्यों से 2. आत्मा पर विश्वास करके
3. अलंकारिक शब्द है 4. मय, सहित 5. धनवान है

ग. इस कविता द्वारा कवि कहना चाहता है कि समय का सम्मान करना चाहिए तथा हमें अपना सारा काम समय पर ही समाप्त कर लेना चाहिए। किसी भी कार्य को बाद में करने के लिए नहीं छोड़ना चाहिए। हमें स्वयं को पछताने का मौका नहीं देना चाहिए।

भाषा ज्ञान

क.

1.	चलना-फिरना	हम सभी को चलते-फिरते रहना चाहिए।
2.	काम-काज	सभी काम-काज को समय पर समाप्त कर लेना चाहिए।
3.	सदा-सर्वदा	सदा-सर्वदा खुश रहो।
4.	भाग-दौड़	भाग-दौड़ के जीवन में सभी लोग व्यस्त हैं।
5.	आना-जाना	धन का आना-जाना लगा रहता है।
6.	पूर्व-पश्चिम	पूर्व-पश्चिम, चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है।
7.	ठंडा-गरम	ठंडा-गरम एक साथ खाने से बीमार हो सकते हैं।
8.	नया-पुराना	वह दुकानदार नया-पुराना सामान खरीदता है।
9.	रोना-हँसना	रोना-हँसना भी जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

ख. स्वयं करें।

ग. स्वयं करें।

घ. 1. रातों-रात 2. हाथों-हाथ 3. देखते-देखते
4. अलग-अलग 5. धीरे-धीरे

ङ. कम-कम – गिलास में पानी कम है।
उसका निशाना कम है।
दल-दाल – रमेश कांग्रेस दल का सदस्य है।
आज खाने में दाल स्वादिष्ट बनी है।
ग्रह-गृह – सौरमंडल में आठ ग्रह है।
आज हमारा ग्रह-प्रवेश है।

च. 1. नीर – जल, पानी, सलील 2. तरु – पेड़, वृक्ष, वट
3. क्षुद्र – दरिद्र, नगण्य, महत्त्वहीन 4. सुयोग– संयोग, सुंदर, मंगल

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।

ख. स्वयं करें।

22 डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

अभ्यास

पाठ ज्ञान

क. मौखिक अभिव्यक्ति

1. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारतीय सामाजिक संस्कृति से ओत-प्रोत थे।
2. विवाह के समय डॉ. राधाकृष्णन सोलह साल के और उनकी पत्नी दस साल की थीं।
3. डॉ. सर्वपल्ली की आरंभिक शिक्षा लुथर्न मिशन स्कूल से हुई।
4. डॉ. सर्वपल्ली की पत्नी का नाम सिवाकामू था।
5. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने स्नातकोत्तर की परीक्षा 1909 में उत्तीर्ण की।

लिखित अभिव्यक्ति

1. डॉ. राधाकृष्णन में एक आदर्श शिक्षक के सारे गुण मौजूद थे। उन्होंने अपना जन्मदिन अपने व्यक्तिगत नाम से नहीं, अपितु संपूर्ण शिक्षक बिरादरी को सम्मानित किए जाने के उद्देश्य से शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की इच्छा व्यक्त की थी, जिसके परिणामस्वरूप आज सारे देश में उनका जन्मदिन 5 सितंबर को 'शिक्षक-दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
2. डॉ. राधाकृष्णन को एक गैर परंपरावादी राजनायिक माना जाता था क्योंकि वे किसी भी प्रकार से राजनितिक दल से जुड़े हुए नहीं थे।
3. डॉ. राधाकृष्णन भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद्, महान दार्शनिक व विचारक थे। उनके इन्हीं गुणों के कारण सन् 1954 में भारत सरकार ने उन्हें सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत किया।
4. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने मैनचेस्टर एवं लंदन में व्याख़्यान दिए। 1931 से 1936 तक आंध्र विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर रहे। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में 1936 से 1952 तक प्राध्यापक रहे। कोलकाता विश्वविद्यालय के अंतर्गत, आने वाले जार्ज पंचम कॉलेज के प्रोफ़ेसर के रूप में उन्होंने 1937 से 1941 तक कार्य किया। सन् 1939 से 1948 तक काशी हिंदू विश्वविद्यालय के चांसलर रहे। 1953 से 1962 तक दिल्ली विश्वविद्यालय के चांसलर रहे। 1946 में यूनेस्को में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। यह सर्वपल्ली राधाकृष्णन की प्रतिभा ही थी, कि स्वतंत्रता के बाद उन्हें संविधान निर्मात्री सभा का सदस्य बनाया गया। वे 1947 से 1949 तक इसके सदस्य रहे। इसी समय वे कई विश्वविद्यालयों के चेयरमैन भी नियुक्त किए गए। अखिल भारतीय कांग्रेस-जन यह चाहते थे, कि राधाकृष्णन गैर राजनीतिक व्यक्ति होते हुए भी संविधान सभा के सदस्य बनाए जाएँ। पं. जवाहर लाल नेहरू चाहते थे, कि राधाकृष्णन के संभाषण एवं वक्तृत्व प्रतिभा का उपयोग 14-15 अगस्त, 1947 की रात्रि को उस समय किया जाए, जब संविधान सभा का ऐतिहासिक सत्र आयोजित हो। राधाकृष्णन को यह निर्देश दिया गया था, कि वे अपना संबोधन रात्रि के ठीक बारह बजे समाप्त करें, क्योंकि उसके पश्चात् ही पंडित नेहरू के नेतृत्व में संवैधानिक संसद द्वारा

शपथ ली जानी थी। सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने ऐसा ही किया। ठीक रात्रि बारह बजे उन्होंने अपने संबोधन को विराम दिया। आज़ादी के बाद उन्हें कई विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारियाँ सौंपी गईं। उनसे आग्रह किया गया, कि वे मातृभूमि की सेवा के लिए विशिष्ट राजदूत के रूप में, सोवियत संघ के साथ राजनीतिक कार्यों की पूर्ति करें। हालांकि उनके चयन पर कई व्यक्तियों द्वारा आश्चर्य व्यक्त किया गया। लोगों की सोच थी, कि एक दर्शनशास्त्री को राजनयिक सेवाओं के लिए क्यों चुना गया। उन्हें संदेह था, कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की योग्यताएँ सौंपी गई ज़िम्मेदारी के अनुकूल नहीं हैं। बाद में उन्होंने यह साबित कर दिया, कि मास्को में नियुक्त भारतीय राजनयिकों में वे सबसे बेहतर थे। वे एक गैर परंपरावादी राजनयिक थे। 1952 में सोवियत संघ से आने के बाद डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन उप-राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। वे देश के पहले उपराष्ट्रपति बनाए गए थे। संविधान के अंतर्गत उप-राष्ट्रपति का नया पद सृजित किया गया था। इस पद हेतु राधाकृष्णन का चयन पुनः लोगों को चौंका गया। बाद में यह निर्णय भी सार्थक साबित हुआ, क्योंकि उपराष्ट्रपति के रूप में एक गैर राजनीतिक व्यक्ति ने सभी राजनीतिज्ञों को प्रभावित किया था। उन्होंने राज्यसभा में अध्यक्ष का पदभार भी सँभाला। 13 मई 1952 से 12 मई 1962 तक उप-राष्ट्रपति पद पर रहते हुए, उत्कृष्ट कार्य करने के बाद 13 मई 1962 को डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भारतीय गणतंत्र के दूसरे राष्ट्रपति के रूप में पदभार सँभाला। 13 मई 1967 को वे सेवानिवृत्त हुए।

ख. 1. चालीस 2. 1888 3. 1903 4. मद्रास

ग. 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

घ. 1. राष्ट्रपति 2. वीरास्वामी, एक पुत्री 3. बारह
4. उप-राष्ट्रपति 5. 1967

भाषा ज्ञान

क. स्वयं करें।

ख. 1. सामाजिक – व्यक्तिगत 2. उत्कृष्ट – निकृष्ट
3. संपूर्ण – अपूर्ण 4. निर्धन – धनवान
5. बचपन – बुढ़ापा 6. उच्च – निच्च

ग.

स्कूल – विद्यालय	गुरुकुल	शिक्षालय
माता – जननी	मातृ	माँ
शिक्षक – गुरु	अध्यापक	आचार्य

घ. स्वयं करें।

रचनात्मक ज्ञान

क. स्वयं करें।

ख. स्वयं करें।

ग. स्वयं करें।

प्रश्न पत्र-1

पढ़िए

क. 1. i) लोकोक्ति ii) दूसरों को उपदेश देना
iii) स्वयं पालन करना चाहिए iv) निषेधवाचक v) तनिक

2. व्यक्ति को उपदेश देने में तनिक भी परिश्रम नहीं करना पड़ता है।

3 देना लेना आचरण

व्याकरण

ख. 1. स्वदेश – विदेश 2. सुगंध – दुर्गंध
3. अनंत – अंत 4. प्रथम – अंतिम
5. सभ्य – असभ्य

ग. 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

घ.

1.	मित्रता ✓	अटल		जन्म
2.	चिलम	शिक्षा		संबंधियों ✓
3.	स्थानीय ✓	खाला		निर्वाह
4.	हिरन	नम्रता ✓		दूभर

ङ. 1. ✓ 3. ✓ 5. ✓

च. 1. जीवन – मरण 2. समतल – असमतल
3. नीचे – ऊपर 4. अचल – विचल
5. दुर्दिन – सुर्दिन 6. पीछे – आगे

लेखन

मोहन वैसे तो बहुत कम पढ़ा-लिखा लड़का था, लेकिन मेहनती बहुत था। कम पढ़ा-लिखा होने की वजह से उसको कहीं नौकरी नहीं मिलती थी।

एक दिन मोहन एक लकड़ी के व्यापारी के पास पहुँचा और पूछा, "सेठजी क्या मेरे लायक कोई काम मिलेगा?" व्यापारी ने मोहन को जंगल से लकड़ी काटने का काम दे दिया। मोहन ने सेठजी से कहा, "सेठजी, मैंने आज 20 पेड़ काट दिए।"

सेठजी ने मोहन की तारीफ़ करते हुए कहा, "अच्छा है, इसी तरह दिल लगाकर काम करते रहो, भविष्य में बहुत उन्नति करोगे।" मोहन सेठजी की यह बात सुनकर और खुश हो गया।

अगले दिन मोहन काम पर गया, आज उसने केवल 18 पेड़ काटे। मोहन फिर से सेठजी के पास गया और बोला, "आज मैंने 18 पेड़ काटे।" सेठजी ने फिर से पहले की तरह ही मोहन को देखकर कहा, "अच्छा है, ऐसे ही मेहनत करते रहो, बहुत उन्नति करोगे।"

मोहन खुशी-खुशी अपने घर आया और अगले दिन सवेरे जंगल पहुँच गया, लेकिन आज पूरे दिन में मोहन ने केवल 10 पेड़ काटे।

वह सेठजी के पास जाकर बोला, "सेठजी आज मैं केवल 10 पेड़ ही काट पाया।"

व्यापारी ने कहा, "कोई बात नहीं, मेहनत करते रहो, तुम बहुत आगे जाओगे" समय के साथ ही मोहन की पेड़ों की कटाई की संख्या धीरे-धीरे कम होती जा रही थी और एक दिन उसने केवल पूरे दिन में एक ही पेड़ काटा।

मोहन बड़े ही उदास मन से सेठजी के पास गया और कहने लगा, "सेठजी ..... मैं सारे दिन मेहनत से काम करता हूँ लेकिन फिर भी पेड़ों की संख्या कम होती जा रही है। ऐसा क्यों?" व्यापारी ने मोहन से पूछा, "मोहन तुमने अपनी कुल्हाड़ी की धार कब लगवाई थी?" मोहन को कुछ समझ नहीं आ रहा था तभी सेठजी ने फिर पूछा, "तुमने अपनी कुल्हाड़ी की धार कब लगवाई थी?" मोहन बोला, "धार, सेठजी मेरे पास तो धार लगाने का समय ही नहीं बचता, मैं तो सारे दिन पेड़ काटने में ही व्यस्त रहता हूँ।"

व्यापारी, "मोहन..... बस इसीलिए तुम्हारे पेड़ों की संख्या दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है। यदि तुम हर रोज़ सुबह पेड़ काटना शुरू करने से पहले, थोड़ी देर अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज़ कर लो, तो कम मेहनत से भी अधिक पेड़ काट सकते हो।"

मोहन को अपने द्वारा की जाने वाली भूल का एहसास हुआ और अगले दिन उसने फिर 20 पेड़ काटे। उसे उसकी सफ़लता की कुंजी प्राप्त हो चुकी थी।

पाठों से

. 1. बचपन का 2. पूड़ियाँ 3. दु:खदायी
4. तेनालीराम को 5. फ़ारसी

. 1. इन पंक्तियों द्वारा कवि कहना चाहता है कि विनम्रता की चमक बाण में ही बसती है। संधि के वचन उसी को पूजते हैं जिसके पास विजय की शक्ति होती है।
2. क्षमा उसी सर्प को शोभा देती है जिसके पास विष होता है। वह सर्प जो दंतहीन और विषरहित है, उससे क्षमा माँगने का कोई लाभ नहीं होता।

ञ. 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

. 1. रजिस्ट्री-मोहर ने खालाजान की ख़तिरदारियों पर मुहर लगा दी। जुम्मन की पत्नी करीमन रोटियों के साथ कड़वी बातों के कुछ तेज़, तीखे़ सालन भी देने लगी। जुम्मन शेख़ भी निष्ठुर हो गए। अब बेचारी खालाजान को प्राय: नित्य ही ऐसी बातें सुननी पड़ती थीं।
2. स्वीडन में लोग लकड़ी के घरों में रहते हैं।
3. झरना ओर जीवन का एक धुन आगे बढ़ते रहना है।
4. बुद्धिराम के बड़े बेटे का तिलक था इसलिए उसके घर में शहनाई बज रही थी।
5. राजा कृष्णदेव राय जहाँ कहीं भी जाते, अपने साथ तेनालीराम को ज़रूर ले जाते थे। इसी बात से अन्य दरबारी तेनालीराम से बहुत जलते थे।

प्रश्न पत्र-2

पढ़िए

क. 1. i) पुरा-वनस्पति का ii) बिहार में iii) प्रो॰ बीरबल ने
iv) शोध संस्थान v) लाघव चिह्न vi) विज्ञान + इक

2. प्रोफ़ेसर बीरबल साहनी को 'भारतीय पुरा वनस्पति का जनक' माना जाता है। उन्होंने बिहार की राजमहल पहाड़ियों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण फ़ॉसिल पेंटाजाइली की खोज की।

3. i) बीरबल ii) बिहार iii) लखनऊ iv) भारत

व्याकरण

ख. 1. उसूल – जीवन में एक उसूल होना आवश्यक है।
2. ताबेदार – वह बालक अपने माता-पिता का ताबेदार है।
3. फ़िक्र – मेरी फ़िक्र करने की ज़रुरत नहीं है।
4. मशवरा – मैंने वकील से सारा मशवरा कर लिया है।
5. इंतज़ाम – यहाँ खाने पीने का अच्छा इंतज़ाम है।

ग. 1. सुख × दु:ख 2. लंबा × छोटा
3. गलत × सही 4. संभव × असंभव
5. रोना × हँसना 6. सफ़लता × असफ़लता

घ. 1. ज़्यादा खाना सेहत के लिए हानिकारक है। — गुणवाचक विशेषण
2. हमारे घर में एक बड़ा बगीचा है। — संख्यावाचक विशेषण
3. मेज़ पर बहुत-सी किताबें रखी हैं। — गुणवाचक विशेषण
4. आपकी कमीज़ में दो मीटर कपड़ा लगेगा। — परिमाणवाचक विशेषण
5. प्यासे को थोड़ा पानी पिला दो। — परिमाणवाचक विशेषण

ङ. 1. "अरे! आप क्यों रो रहे हैं? आपको क्या दु:ख है?"
2. "क्या बात है? तुम इस तरह क्यों चिल्ला रहे हो?"
3. पत्नी बोली- "देखो! तुम्हारी माँ बहुत बूढ़ी है।"
4. "माँ! अब तुम बताओ मुझे शंकर जी से क्या माँगना चाहिए।"

च. 1. मैं नहाकर खाना खाऊँगा। 2. दौड़कर आओ।
3. चोर भागकर एक घर में घुस गया। 4. जंगली तोते को गुलेल से मारकर उड़ा दो।
5. तोता गरदन पर घाव खाकर एक तरफ़ हट गया।

लेखन

छ. 73, राजेंद्र नगर,
नई दिल्ली

दिनांक : 22.08.20.....

प्रिय सुबोध,

सप्रेम नमस्ते।

आशा है तुम सकुशल एवं आनंद से होगे। मैं भी अपने परिवारजनों सहित कुशलपूर्वक हूँ। मैं दो दिन पूर्व ही नैनीताल का भ्रमण कर वापस लौटा हूँ।

नैनीताल एक पर्वतीय स्थल है। पर्यटन की दृष्टि से यह भारत के महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थलों में से एक है। चारों ओर हरे-भरे पहाड़ों व सुंदर प्राकृतिक दृश्यो से घिरा यह स्थल सभी का मन मोह लेता है। ग्रीष्म ऋतु में यहाँ की ठंडी हवाएँ सभी को ताज़गी पहुँचाती है। यहाँ की झील में नौका विहार का आंनद ही कुछ और है।

पहाड़ी मार्ग के किनारे गहरी सुंदर घाटियों का दृश्य अद्‌भुत लगता है। रास्ते में पहाड़ों से निकलकर बहते झरनों का दृश्य तो इतना मनमोहक लगता है, कि लोग मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

ऊँचाई पर एक जगह बादल हमारी बस की खिड़कियों से अंदर प्रवेश करने लगे। उस समय सचमुच ऐसा लग रहा था, जैसे हम स्वर्ग का सुख प्राप्त कर रहे हैं।

तुम्हारी छुट्टियाँ कैसी बीती, इसका उल्लेख अपने पत्र में अवश्य करना। अपने माता-पिता को मेरा सादर प्रणाम कहना।

सप्रेम,

तुम्हारा मित्र

रोहित

ज. पानी के बिना हमारा जीवन संभव नहीं है। हमारे रोज़मर्रा के जीवन में जल का बहुत महत्त्व है। यह हमारे शरीर का पाचन कार्य करने में बहुत मदद करता है। जल हमारे शरीर के तापमान को सामान्य बनाने में भी मदद करता है। परंतु जब जल मनुष्य के लिए इतना महत्त्वपूर्ण है तो भी मनुष्य इसकी ज़रूरत को नहीं समझता और जल को दूषित करता रहता है। जल-प्रदूषण और जल की बर्बादी के कारण अब जल हमें पीने के लिए भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो पा रहा है।

गंगा भारत की सबसे पवित्र नदी मानी जाती है। कहा जाता है कि वह स्वर्गलोक की यात्रा कराने वाली नदी है। गंगा अनेक पापों को धोती है, परंतु वही जीवनदायी गंगा आज कल-कारखानों के ज़हरीले कूड़े-कचरे से प्रदूषित हो गई हैं।

पाठों से

झ 1. अपना रुपया सहेजना 2. जहाँगीरी अंडा 3. लोटे में
4. पाँच सौ रुपये में 5. बालकनी में

ञ. 1. रोना और **मचल जाना भी**,
क्या आंनद दिखाते थे।
बड़े-बड़े **मोती से आंसू**
जयमाला पहनाते थे।

2. माँ ओ ! **कहकर बुला रही थी,**
मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुँह में, **कुछ लिए हाथ में,**
मुझे खिलाने आई थी।

ट. 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

ठ. 1. आलस्य के कारण हम अपना कार्य समय पर पूरा नहीं कर सकते जिसके कारण हमें बहुत-सी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है।

2. विघ्न-बाधाएँ साहसी व्यक्ति के सामने नहीं ठहरती क्योंकि वह उनका डटकर सामना करता है।

3. जफ़र अली के अनुसार उसका मुख्य उद्देश्य सोना-चाँदी लूटना था।

4. पिंजरे का तोता समझता था कि उसे वहाँ खाने-पीने का सारा सामान उपलब्ध है, उसे किसी तरह से डरने की आवश्यकता नहीं हैं। इसलिए वह स्वयं को खुशकिस्मत समझता था।

5. अंग्रेज़ ने लोटे को अकबरी लोटा समझकर खरीदा।